ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 270-271

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

"जौ कलिनाम कबीर न होते"

डॉ0 सुधा राय E-mail: sudhaashokrai@gmail.com

Received- 21.07.2021, Revised- 26.07.2021, Accepted - 01.08.2021

सारांश : ***कबीर महान् द्रष्टा, महान क्रान्तिकारी एवं समाज सुधारक थे। उनकी, साखी (दोहे) सबद (पद) रमैनी (चौपाई) समाज की जड़ता को तोड़ने में सहायक है, संसार में वासनाओं का जो खेल चल रहा है, उस खेल को नष्ट करने में कबीर का एक–एक गाया हुआ गीत पढ़े–लिखे को शर्मशार करता है। कलियुग (कलयुग) छोटी–छोटी बातों में कलह का कारण ढूँढता है, जब कि कितनी बातों में दम नहीं है, पर हम उसमें भी समस्या ढूँढ लेते हैं, और कबीर सभी को 'मनुर्भव' का संदेश देते हैं।***

कुंजीभूत शब्द–महान क्रान्तिकारी, समाज सुधारक, चौपाई, शर्मशार।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने महान् सद्गुरू कबीर पर लिखा है– "सिर से पैर तक मस्त–मौला आदत से अक्खड़, स्वभाव से फक्कड़, वेशधारी के सामने प्रचण्ड, भक्त के सामने निरीह, भीतर से कोमल, बाहर से कठोर जन्म से अस्पृश्यनीय, कर्म से वन्दनीय, जो कुछ कहते थे, वह अनुभव के आधार पर कहते थे, और उसी में रहते थे"

कबीर का स्वयं साक्षात्कार किया अनुभव सबको षोध–बोध कराता है– "तेरा–मेरा मनुवा कैसे इक होय रे! तू कहता कागद की लेखी, मैं कहता आँखिन की देखी।"

सच तो है, मौखिक, लिखित में जबरदस्त परिवर्तन होता है, प्रण–निष्ठ व्यक्ति प्रमाणित हो जाता है, परमात्मा की नजर में भी और मनुष्य की आवाज में भी 'कलिनाम' में स्मरण चिन्तन, निवारण की आराधना, कर्म की प्रतिष्ठा पर ही निष्ठित है।

जब कबीर विकार की झोली जलाने की बात करते हैं, तो इसमें गूढ बात शरीर एवं मन–आत्मा–परमात्मा तक हृदय स्पर्शी अनुभूति कराते हैं–

"झल उठी झोली जली, खपरा फूटिम फूटि।
जोगी था सो रमि गया, आसणि रही विभूति।।"

"अर्थात् विज्ञान की ज्वाला में शारीरिक वासना की झोली जल गयी, योगी का माँगने वाला खप्पर भी टूट गया। योगी साधना की अवस्था में रमण करने लगा, अब आसन में मात्र विशेष प्रकार की अनुभूति शेष रह गयी (दुनिया आचरण में कम रमती है, भभूत पर ज्यादा भरोसा करती है, यह है द्वन्द्व सांसरिक जिसे समझना होगा।")

संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म सबको समझकर करना है। दुनियाँ उल्टा समझती है, जैसे हम स्वयं आकार–प्रकार में बढ़ते हैं, और कहते हैं, कपड़ा छोटा हो गया। इसी तरह हमारी उम्र तिल–तिल कर समाप्त हो रही है, और हम उसमें उम्र की गिनती बढ़ने से करते हैं, कर्म स्वभाव दर किनार हो जाता है, संयम को, साँस फूलती रहती है। कबीर ने 'उलटवासी' कहना प्रारंभ किया–

"समंदर लागी आगि, नदियाँ जलि कोइला भई। देखि कबीरा जागि, मंछी रूंषा चढ़ि गयी।।"

अर्थात्–संसार रूपी समुद्र में आग लग गयी है, और इस आग से सब नदियाँ (शरीर की वासना, शरीर की नाड़ियाँ–इत्यादि) जलकर कोयला हो गयी, कबीर उठ कर देख तो सही! मछली पेड़ पर चढ़ गयी। (मछली साधक जीव है, रूंशा रूखा चढ़ जाना यानी जागतिक बोध से ऊपर उठ जाना, ब्रह्म में लीन होकर सकर्मक–कर्म करना) इसमें शरीर की इन्द्रियाँ, एवं चेतना को झंकृत किया गया है।

कबीर क़दम–कदम पर स्वयं 'चैतन्य परमानंद' में विचरण करते हैं, और घोर–कलयुग से बचने का संदेश भी देते हैं। धर्म की वैज्ञानिक दृष्टि एवं सर्वाधिक महत्व पूर्ण विशिष्ट सामयिक चिन्तन कबीर के दोहे, पद (साखी) में भरे पड़े हैं। ऐसा शुभ सुखप्रद कल्याणकारी धर्म कभी भी किसी काल में, अशुभ, दुःखप्रद एवं अकल्याणकारी नहीं हो सकता। यदि धर्म के दायरे में कुछ धर्म–प्रवंचकों के द्वारा, अशुभ, दुखदायक, अकल्याणकारी घटित हो रहा है, तो फिर कहीं न कहीं धर्म के सत्य, तत्व व मर्म को ठीक से समझा नहीं गया है, न सही ढंग से समझने की कोशिश की गयी है। 'कबीर धर्म के खरे सच के पर्याय हैं।'

धर्म की सम्पूर्णता को, वैज्ञानिक प्रयोगों की समग्रता से जाँचा, परखा तब समाज को दिशा निर्देष्श दिया।

डॉ0 पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल कबीर महिमा के बारे में बता रहे थे– "उतराखण्ड में कबीर को नाथ ही माना जाता है, और निरंकार की पूजा में कबीर की जागर लगती है।" "जागर" किसी व्यक्ति में किसी देवता का आदेश आमन्त्रित करने को कहते है।

अध्यात्मिक क्रान्ति तभी संभव है, जब हम किसी तरह की उपलब्धि लालच को गिराने का उपक्रम करते हैं। जब कुछ पाने का विचार ही छूट जाता है, केवल निष्काम–कर्म यज्ञ।

गागरेन गढ़ के राजा पीपा उच्च कुल के चौहान थे, उन्होंने रियासत छोड़कर 'दर्जी' का कार्य

एसो0 प्रो0– अध्यक्षः हिन्दी–विभाग रा0मो0ग0पी0जी0 कॉलेज, अयोध्या, फैजाबाद (उ0प्र0) भारत

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-III, Issues-21, YEAR- Sept.-2021

स्वीकार किया। पीपा अपने गुरू भाई कबीर के प्रति कृतज्ञ हैं, यह न कहते कि लोक, वेद और कलियुग से भक्ति को कौन बचाता पीपा कबीर की सदगुरू महानता पर पद लिख देते हैं–

"जौं कलिनाम कबीर न होते।
तौ लोक, वेद, अरू कलियुग मिलिकर भगति रसातल देते।।
अगम–निगम की कही–कही पाण्डे फल या गौत लगाया।
राजस, तामस, सतगि कवि कीय इनहीं जुगाति भूलाया।।
त्रिगुन रहति, भगति भगवन्तहिं बिरला कोई पावै।
दया होइ कृपा नाथ की तौ नाम 'कबीरा' गावै।।
भगाति प्रताप रखिबै करनि जनु आप पढ़ाया।
नाम कबीरा साच प्रकासा तहाँ पीपै को पाया।।
कबीर अनुभव–अनुभूति की गंगा में सद्यः स्नाता हैं।
समाज सुधारक, कर्मठ–योद्धा है भक्ति–साधना के सरल पुजारी हैं।।
समग्रता से पढ़े और समझे बिना, दावे करना व्यर्थ है।
कबीर के साखी को रवानगी देखिये।
यह जग अंधला जैसे अंधी माई।
बछा था जो मर गया, अभी चाम चटाई।।

कबीर की संवेदना, राम–नाम, स्मरण, कीर्तन, सेवा–समाज कल्याण भावना एक साथ सब को धारण करने कराने की धारणा रखती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कबीर ग्रन्थावली – डॉ0 भगवत स्वरूप मिश्र (संपादन) प्रथम संस्करण–1966.
2. चौरासी अंग की साखी – आ0 गंगा शरण शास्त्री। प्रथम संस्करण–2005.
3. मगहर–महोत्सव – स्मारिका–2014 मगहर महोत्सव समिति (प्रकाशन)।
4. मगहर–महोत्सव – स्मारिका–2013 मगहर महोत्सव समिति (प्रकाशन)।
5. कबीर पद मिताक्षरा – आ0 गंगा शरण शास्त्री–2003.

*****